

ANIL KUMAR

DEPARTMENT OF HISTORY
R.B.G. COLLEGE
MAHARAJGANT (SIWAN)

पुरापाषाण काल (पूर्व पाषाण काल) - Paleolithic Period

भारतीय इतिहास का प्रारम्भिक पाषाण काल जब मानव द्युमक्कड़, आचारहीन व शिकारी था, प्राक् इतिहास के अन्तर्गत आता है। प्राक् इतिहास की अध्ययन की सुविधा के लिए पूर्व पाषाण काल (पुरापाषाण काल) तथा मध्य पाषाण काल में विभाजित किया गया है। भारत में पूर्व पाषाण काल से सम्बन्धित शोध का इतिहास लगभग 125 वर्ष पुराना है।

पुरापाषाण प्रथम अन्तर- हिमयुग (20 लाख वर्ष पूर्व) से द्वितीय हिमयुग (लगभग 9-10 लाख वर्ष पूर्व) (20 लाख वर्ष पूर्व) से लेकर हिम युग की समाप्ति (ई० से 10-18 हजार वर्ष पूर्व) तक का काल था। अतः इतनी लम्बी अवधि में मानव जीवन एक जैसा आचरण नहीं रहा, बल्कि हिम युग के उतार चढ़ाव के अनुसार उसके शारीरिक स्फूर्ति और सांस्कृतिक जीवन में उत्तरोत्तर परिवर्तन होता रहा था। इसका प्रमाण इस काल के पाषाण उपकरणों के निर्माण - प्रयोगिकी और उसके आकार-प्रकार में पाया गया है। इसलिए प्रगतिहासज्ञ पुरा पाषाण को पाषाण उपकरण निर्माण की तीन प्रयोगिकी के आधार पर तीन उपकाल में बाँटे हैं। — निम्न पुरा पाषाण काल, मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरा पाषाण काल।

(1) निम्न पुरा पाषाण काल — भारत की निम्न पूर्व पाषाण काल की संस्कृति को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है — (1) चोपर-चापिंग पेबुल संस्कृति (उत्तर भारतीय/कश्मीरी) / सोहन अथवा पेबुल उपकरण उद्योग वाला निम्न पुरा पाषाण) और (2) हैण्ड रक्स संस्कृति (दक्षिण भारतीय/मद्रासी/हस्तकुठार उपकरण उद्योग वाला निम्न पुरा पाषाण)।

चौपर-चौपिंग पेबुल संस्कृति —

यह संस्कृति पाकिस्तान के पंजाब में प्रवाहित होने वाली सिन्धु की सहायक 'सोहन' नदी की घाटी में फिर गए प्राकृतिक इतिहास के अन्वेषण के फलस्वरूप सर्वप्रथम प्रकाश में आई। चौपर-चौपिंग तथा फलक इस संस्कृति के प्रमुख फलक हैं। यह संस्कृति नर्मदा के उत्तर में शिवालिक घाटी से उड़ीखा के मथुरा भंज तक फैला हुआ पाया गया है। चौपर (कत्ता), चौपिंग (खुरचनी) होता था। इसके शिकारी मानव हिमालय के हिम नदी के द्वारा पाहाड़ों पर खेचसीट कर लाये गये पेबुल (बलीकाश्म) से उपकरण बनाया करते थे। ये पेबुल चिपटे किन्तु चिकने हुआ करते थे। इनके एक सिरा को तौड़ और दूसरे छोट कर कार्यांग और दूसरे चिकने सिरा को मूठ के रूप में उपयोग किया जाता था। पेबुल चौपर से शिकारी मानव लकड़ी को काट छोट कर नोकदार शूल (pointed) बनाता था और उसी से शिकार करता था। शिकार का स्वास उतारने के लिए पेबुल खुरचनी और मांस को टुकड़ा-टुकड़ा करने के लिए फिर पेबुल चौपर का प्रयोग किया जाता था। इस उपकरण का कार्यांग मोटा, चार भी बेडोल और छोटा होता था। हिम युग की समाप्ति के साथ ही पेबुल उपकरण की संस्कृति वाले शिकारी मानव का या तो अन्त हो गया था उनके आँजार संस्कृति में परिवर्तन आ गया।

हैण्ड एक्ल संस्कृति — इसे दक्षिण भारतीय/

मद्रास हस्त कुंठार उपकरण संस्कृति भी कहा गया है। इस संस्कृति का मुख्य केन्द्र विंध्या के दक्षिण का क्षेत्र था। सर्व प्रथम आर० वी० फूट ने इस संस्कृति

के अवशेष को मंदास के पास बाल किया। इस संस्कृति के उपकरण का कार्यांग नुकीला और हल्का अन्त गोलाकार होता था ताकि दोनों हाथ से पकड़कर शिकार पर चोर किया जा सके इसलिए इसको हस्त कुठार (Hand-axe) कहा गया है। इस संस्कृति में हस्त कुठार के अतिरिक्त विदारक (Cleave) और खुरचनी (Scraper) भी बन गया था। हस्त कुठार से पशुओं का शिकार विदारक से चमड़ा उतारना और मांस को टुकड़ा-टुकड़ा करना तथा खुरचनी से हड्डी से मांस को अलग करने में उपयोग किया जाता था इस तरह पेषुष उपकरण से हस्त कुठार उपकरण शिकार का प्रत्यक्ष और बेहतर उपकरण प्रयोगिकी थी। आंध्र प्रदेश के चित्तूर क्षेत्र, कृष्णाघाटी के नागार्जुन कोण्डा, कर्नाटक के माछप्रभा घाटी, तुंगभद्रा घाटी, महाराष्ट्र के गोदावरी के नेवासा और प्रवरा घाटी इस संस्कृति के प्रमुख क्षेत्र थे।

इस तरह भारतीय उपमहाद्वीप में निम्न पुरापाषाणकाल में आदिमानव के दो अलग-२ शिकारी समूह निवास किया करते थे। इन्हीं दोनों के मिश्रण से भारत में मानव वंश का उद्भविकास हुआ, जिन्होंने मध्य-पुरापाषाण संस्कृति का जन्म दिया था।

(२) मध्य पुरापाषाण काल — भारत में निम्न पुरापाषाण काल से ही मध्यपुरापाषाण संस्कृति का विकास और प्रसार हुआ। इस काल में हिमपात में काफी कमी आयी थी, वर्षा की प्रधानता थी। अतः वातावरण पहले से शुष्क होता जा रहा था। निम्न पुरापाषाणकाल की तुलना में मध्यपुरापाषाणकाल की अवधि छोटी थी। जलसंध्या की भी वृद्धि हुई। फलतः जीविका के साधन और हथियार औजार में भी